॥ शराब का ड्रामा ॥

भजन नं० १

(शराबी) भरजाम भरजाम भरजाम पियूं गुल लाला बनूं जैन्टिलमैन मैं आला, हां जिसपै उसकी रहमत उसे मिलती ऐसी नेमत ॥

(मुखालिफ) जो पिये बनादे वहशी, यह जानकी दुशमन ऐसी। लख लानत मुंह पै थू अमल ऐसे की ऐसी तैसी ॥ ख्वाह कितनाही हो ख्वांदा झट पट कर देती अंधा॥ ये अक़ल पिलावे जिंन्दा फ़ेल यह गन्दा ॥

(शराबी) रम विसकी बरांडी देसी, पीलो दिलचाहे जैसी।

(मुखालिफ) लखलानत मुंह पै थू अमल अैसे की ऐसी तैसी ॥

(शराबी) भर जाम ३ पियूं गुल लाला बनूं जैन्टिलमैन मैं आला, हो जिसपै उसकी रहमत उसे मिलती ऐसी नेमत ॥

(मुखालिफ) दे त्याग नशा ये भाई जर दरकी करे सफाई। जिस ने यह मूंह से लगाई ना पास रही इक पाई ॥

(शराबी) ये बात बनाते कैसी करते दीवाने जैसी ॥

(मुखालिफ) लख लानत मुंह पै थू अमल अैसे की अैसी तैसी ॥

(शराबी) क्या मजेदार यह प्याला पीकर होजा मतवाला, जिसको यह मिला निवाला उसे समझो क़िस्मत वाला ॥

(मुखालिफ) वाह मजेदार यह प्याला मोरी में गिराने वाला। जूतों से पिटाने वाला इज्जत को घटाने वाला ॥

(शराबी) यह मस्त बनावे ऐसा बस बादशाह है जैसा ॥

(मुखालिफ) शेर-ऐ अहले हिंद तुमको डबोया शराब ने। जाहो जलाल मरतबा खोया शराब ने। वे खुद पड़े हो ऐसे कि अपनी खबर नहीं। उल्लू बनादियां तुमहें गोया शराब ने। अब मंजिले तरक्की पर पहूंचोगे किस तरह। कांटों का बीज राह में बोया शराब ने॥ गैरत नहीं जरा तुमहें देखो तो हाल को फैहरिस्त नंगो नाम को धोया शराब ने॥

(चलत) यह हालत देखी कैसी बिलकुल है मुर्दा जैसी॥ अब होश में आओ छोड़ नशे को इसकी ऐसी तैसी॥

(शराबी) क्या अजब हाल हुवा मेरा किस बदमस्ती ने घेरा। यह कैसा छाया अंधेरा दिखता नहीं शाम सबेरा॥

(मुखालिफ) तू हट को छोड़दे भाई नहीं इसमें कोई बड़ाई, यह नशा बड़ा दुखदाई कहता हूं सुन चितलाई॥

(शराबी) तेरी मान नसीहत छोडूं बोतल को जमीं से तोडूं ना पीयूं कभी यह प्याला वे इज्जत करने वाला ना पियो कोइ यह प्याला, लानत लानत यह प्याला॥

॥ भंग का ड्रामा ॥

भजन नं० २

(पीनेवाला) चलो भंगिया पीयें चलो भंगिया पीयें इस बिन मूरख योंही जीयें। कूंडी सोटा बजे दमादम छने छनाछन भंग मजा जिन्दगी का जब यारो हों चुल्लू में दंग॥

(बिरोधी) मत भंगिया पिओ २ इस से अच्छे योंही जियो खुशकी लावे अक्ल नशावे बे सुध करके डारे होश रहे नहीं दीन दुनी की बिनां मौत ही मारे॥

(पीनेवाला) तू क्या जाने स्वाद भंगका है यह रस अनमोल मगन करे आनंद चढ़ावे दे घट के पट खोल ॥

(विरोधी) सर घूमें और नथने सूखें नींद घनेरी आवे कल की बात रही कल ऊपर भूल अभी की जावे ॥

(पीनेवाला) भंग नहीं यह शिव की बूंटी अजर अमर है करती जन्म जन्म के पाप नशा कर सब रोगों को हरती ॥

(विरोधी) भंग नहीं यह विश की पत्तियां करे मनुष्य को ख्वार जीते जी अधा कर देती फिर नर्कों दे डार ॥

(पीने वाला) कुंडी में खुद बसे कन्हैया और सोटे में श्याम विजिया में भगवान बसे हैं रगड़ रगड़ में राम ॥

(विरोधी) अरे भंग के पीने वाले भंग बुद्धि हर लेत होशियार और चतुर मर्द को खरा गधा कर देत ॥

(पीलेवाला) झूंटी बातें फिरे बनाता ले पी थोड़ी भंग एक पहर के बाद देखना कैसा छावे रंग ॥

(विरोधी) लानत इस पर लानत तुझपर चल २ होजा दूर भंग पिये भंगी कहलावे अरे पात की कूर ॥

(पीनेवाला) शेर

भंग के अद्भुत मजेको तूने कुछ जाना नहीं । रंग को इस के ज़रा भी मूढ पहिचाना नहीं ॥ आंख में सुरखी का डोरा मन में मौजों की लहर । शांति आनंद इसके बिन कभी पाना नहीं ॥ चलत, साधू संत भंग सब पीते क्या कंगाल अमीर ईश्वर से लौलीन करावे ये इसकी तासीर ॥

(विरोधी) शेर

है नहीं यह भंग कातिल अक़ल को तलवार है करती है

बेहोश ऐसा जानो यह मुरदार है ॥ खौफ जिनको है नर्क का वो इसे छूते नहीं, बात सच मानों प्यारे यह नर्क का द्वार है (चलत) यह सब झूंठी बातें भाई भंग नरक में डालरे आंखें खोल जगत में देखो लाखों काम बिगाड़े ॥

(पीनेवाला) सुनकर यह उपदेश तुमहारा हमें हुआ आनंद लो में छोड़ी भंग आज से ईश्वर की सोगंद ॥

(विरोधी) भला किया ये काम आप ने दई भंग जो छोड़ और भी सब से नियम कराओ कूंडी सोटा फोड़ ॥

(पीनेवाला) कूंडी फोडूं सोटा तोडूं भंग सड़क पर डारूं कोई मत पीना भंग भाईयों बारंबार पुकारूं ॥

शराब का भजन नं० ३

राम नाम रस के एवज में शराब का अब है प्याला
पिलादे साक़ी रहे न बाकी कुछ बोतल में गुल लाला
पीपी शराब बन कर नवाब गलियों में टक्कर खाते हैं
अड़ंग बड़ंग मुह से बकते हैं टेढ़ी चाल दिखाते हैं
नशेका चक्कर जिस दम आया नाली में गिर जाते हैं
कम करने को नशा महरबान कुत्ते उन्हें न्हिलाते हैं
नंबर वन की मुंह में बरांडी छोड़ रहा कुत्ता काला
पिलादे साक़ी रहे न बाकी कुछ बोतल में गुल लाला ॥ १ ॥
भंगी और भिस्ती ने जब यह आकर देखा नज्जारा
नाली में से उठ ओ भड़वे कहां से आया हत्यारा
कौन कहै न सोऔ पलंग पै यह तो उल्लू घर मारा
टांग पकड़ महतर ने खींची ज़ोर से एक पंजर मारा
ऐसा केस एक दिन हमने नजरों से है देखा भाला
पिलादे साक़ी रहे न बाकी कुछ बोतल में गुल लाला ॥ २ ॥

आते जाते लोग देखकर कहने लगे मय ख्वार पड़ा
कोई कहै है भले घरों का नालायक बदकार पड़ा
कोई कहै मुहताज है भूखा पैसे से लाचार पड़ा
कोई कहै हैजे पलेग का ताजा ही बीमार पड़ा
सिविल पुलिस में खबर करादो लेजावे डोलीवाला
पिलादे साकी रहे न वाकी कुछ बोतल में गुल लाला ॥ ३ ॥
जर जमीन बरबाद करी घर पे औरत बीबी रोती
बेचदिये मेरे हंसले कठले वेचे नथली के मोती
एक रोज जब मिली न पाई कलाल को जा दी धोती
बेहद पीने वालों की अकसर ऐसी हालत होती
रामचंद्र सत संग रंग का पिया करो मित्रो प्याला
पिलादे साकी रहे न वाकी कुछ बोतल में गुल लाला ॥ ४ ॥

भजन नं० ४

जो चाहते हो खुशी से जीना नशा न पीना नशा न पीना ॥
बुरी बला है यह जामो मीना नशा न पीना नशा न पीना ॥
शराब अफयूनो चरस गांजा है एक से एक बढ़के कहर मोला
पुकार कर कह रहा है बंदा नशा न पीना नशा न पीना ॥ १ ॥
शराबियों की जो देखी हालत किसी के कपड़े हैं कैसे लत पत
कोई है कहता व चश्मे इबरत नशा न पीना० ॥ २ ॥
कोई बदरौं में पड़ रहा है किसी का मुंह कुत्ता चाटता है
कोई ये चिल्ला के कह रहा है नशा न पीना नशा न पीना ॥ ३ ॥
अगर तुमहारी हैं चश्मे बीना न खाना अफयूं न भंग पीना
डबोयेंगे यह तेरा सफीना नशा न पीना नशा न पीना ॥ ४ ॥

भजन नं० ५

मय कशी में देखलो यारो मजा कुछ भी नहीं, खुद बखुद

बेखुद बनें लेकिन मजा कुछ भी नहीं ॥ १ ॥ सारे घर का मालो जर बोतल के रस्ते खोदिया मुफ्त में इज्जत गई पाया मजा कुछ भी नहीं ॥ २ ॥ जब नशा उतरा तो हालत और अबतर हो गई खाली बोतल देखकर बोलें मजा कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥ रात दिन नारी बिचारी जान को रोया करे ऐसी मय ख्वारी पे लानत है मजा कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥ न्यामत इस मय की उलफ़त का नतीजा देखलो बस खराबी के सिवा इस में मजा कुछ भी नहीं ॥ ५ ॥

॥ हुक्के का ड्रामा ॥

भजन नं० ६

(हुक्केबाज) आहाहाहा क्या अच्छा हुक्का है ।
है कोई हुक्के का पीनेवाला ॥ (चलत)

क्या हुक्का बना ये आला भर २ पीलो तुम लाला जो पीवें इसे पिलावें वो लुत्फ़ जिन्दगी पावें ।

(मुखालिफ़) बुरी आदत है यह भाई मत इस की करो बड़ाई दूर २ हो लानत २ क्यों बनता सौदाई यह तन को खूब जलावे बलग़म को बहुत बढ़ावै जो मूंह को इसे लगावे ना लज्जत कुछ भी पावे ॥

(हुक्केबाज) जिस को इक चिलम पिलाई बलगम की करी सफ़ाई ।

(मुखालिफ़) दूर २ हो लानत २ क्यों बनता सौदाई ॥

(हुक्केबाज) क्या हुक्का बना ये आला भर २ पीलो तुम लाला जो पीवें इसे पिलावें वह अक़्ल बन्द कहलावें ।

(मुखालिफ़) जो हुक्के का दम लावे ले चिलम आग को

जावैं सौ सौ गाली फिर खावें यह मान बड़ाई पावें ॥

(हुकेबाज) यह कैसी बात बनाई कुछ कहते शरम न आई ।

(मुखालिफ) दूर २ हो लानत २ क्यों बनता सौदाई ॥

(हुकेबाज) क्या खूब बना यह आला गंगा जल इस में डाला पीते हैं अदना आला यह घट में करे उजाला ॥

(मुखालिफ) क्या खाक बना यह आला दिल जिगर करे सब काला अच्छा यह नशा निकाला दोजख में गिराने वाला ॥

(हुकेबाज) यह महफ़िल का सरदार क्या जाने मूढ़ गंवार ।

(मुखालिफ़) शेर

कब तक के हुक्का नोशों मुहल्ला जगाओगे । बंशी जगाके नाग को कब तक खिलाओगे ॥ एक दिन यह मारे आस्तीं डसेगा बस तुमहें पजे से ऐसे देव के बचने न पाओगे ॥ गर जिन्दगी चाहते हो तो इस को तरक करो । खुद अपना वरना खिरमने हस्ती जलाओगे (चलत) जिन इससे मिति लगाई आखिर में हुई दुख दाई मान कहा क्यों पागल बनता कहां गई चतुराई

(हुकेबाज) तेरी मान नसीहत छोडूं । ले अभी चिलम को तोडूं नहचे को तोड़ मरोड़ हुके को जमीं से फोडूं । ना पीऊं कभी यह हुका लानत २ यह हुका । ना पियो कोई यह हुका बेशक लानत २ यह हुका ॥

॥ सिगरेट का ड्रामा ॥

भजन नं० ७

(पीनेवाला) यारो मुझे सिगरेट या बीड़ी दिलाना बीड़ी दिलाना माचिस लगाना कैसा यह फैसन बना ॥

(मुखालिफ़) शेम २—छोड़ो ज़रा सिगरेट का पीना पिलाना पीना पिलाना दिलको जलाना नाहक क्यों करते गुनाह ॥

(पीनेवाला) दूर २—है जेब खाली डिबिया खाली छूटता नहीं यह नशा ॥

(मुखालिफ) शेम २ मदरा पड़ी इसमें लीद भरी है लानत लानत नशा ॥

(पीनेवाला) दूर २—बातें हैं कैसी दीवानों यह जैसी गप शप लगाते हो क्या ॥

(मुखालिफ) शेम २-होवेगी ख्वारी नरकों की तैय्यारी हट को तो त्यागो ज़रा ॥

(पीनेवाला) दूर २-पीओ पिलाओ ज़रा मुंहको लगावो कैसा यह शीरीं अहा ॥

(मुखालिफ) शेम २-शी ऐल पुकारे जिनदास प्यारे सोचो तो दिल में जरा ॥

(पीनेवाला) यश २-सोचा विचारा दिलमें यह धारा वेशक बुरा है नशा ॥

(मुखालिफ़) शावाश–छोड़ो जरा सिगरेट का पीना पिलाना
सिगरेट को तोडूं डिबिया मरोडूं लानत है लानत नशा ॥
(मुखालिफ़) शाबाश–छोड़ो जरा सिगरेट का पीना० ॥

भजन नं० ८

कस २ के मारेंगे तीर नशे तेरे दिल में जिगर में ॥ टेक ॥
विस्की का मारा कोई न बचता भंग का मारा फ़क़ीर ॥ १ ॥
हुक्के का मारा हुआ दिवाना सिगरट का मारा बे पीर ॥ २ ॥
पोस्त अफ्यूं भंग जितने नशे हैं करते हैं सब तसहीर ॥ ३ ॥

इन नशों को जो कोई पीतें बुरी उन की तक़दीर ॥ ४ ॥
जिन्दगीको जो चाहो प्यारो बचने की करो तदबीर नशे तेरे० ॥५॥

॥ चोरी का ड्रामा ॥

भजन नं० ६

(चोर) चलो चोरी करैं चलो चोरी करैं जाकर किसी का धन हम हरैं (टेक) चोरी करने वाले यारो मन माना धन पाते मजे करें हैं अपने घर में बैठे ऐश उड़ाते ॥ १ ॥

(विरोधी) मत चोरी करो मत चोरी करो नाहक किसी का धन क्यों हरो (टेक) इस दुनिया में धन है भाइयो प्राणों से भी प्यारा जोकोई चोरी करके लावै वो होवे हत्यारा ॥ २ ॥

(चोर) चोरी करने वाले यारो कभी न हो कंगाल सारा कुनवा ऐश उड़ावे मिले मुफ्त का माल ॥ ३ ॥

(विरोधी) चोर उचक्के डाकू का कोई नहीं करे इतबार। घर बाहर नहीं इज्जत पावे बुरा कहै संसार ॥ ४ ॥

(चोर) चोर उचक्के डाकू जग में जवांमर्द कहलाते। नाम हमारा सुन के भाई सभी लोग थर्राते ॥ ५ ॥

(विरोधी) बुरा काम चोरी है भाई मतलो इसका नाम पड़ैं जेल खाने में जाकर नाहक हों बदनाम ॥ ६ ॥

(चोर) चोरी करने वाले यारो जरा फिक्र नहीं करते चाहे क़ैद हो जाय वहां भी पेट मजे से भरते ॥ ७ ॥

(विरोधी) क्या करता तारीफ़ क़ैद की सुन कर दिल थर्रावै चक्की पीसें बुनें बोरिये मार रात दिन खावैं ॥ ८ ॥

(चोर) जो असली हैं चोर क़ैद में नहीं मार वो खाते।

करकै काम मजे से सारा मुफ्त रोटियां पाते ॥ ९ ॥

(विरोधी) नहीं चैन दिन रात क़ैद में भरते रहें तबाई । महा कष्ट से प्राण छोड़ कर सहें नरक दुख भाई ॥ १० ॥

(चोर) नरकों के कुछ दुख का भाइयो मत ना करो विचार देखे भाले नहीं किसी ने योंही कहै संसार ॥ ११ ॥

(विरोधी) शेर

नरकोंके दुखकी कुछ तुमहें यारो खबर नहीं, दूसरेका धन हरो हो फिर भी मनमें डर नहीं । मारें छेदें चीरें फारें नर्क गतिमें नारकी याद रक्खो चोर का इसके सिवा कोई घर नहीं । गर तुमहैं मजूर होवैं बहतरो अपनी सदा, मत हरो धन और का इस का समर अच्छा नहीं (चलत) जो चोरी से नहीं डरते वो दुख नरकों में भरते मान कहा मूरख अज्ञानी चोरी कभी न करना ॥

(चोर) अब मेरी समझ में आई बेशक है बहुत बुराई त्याग किया चोरीका मैंने जो जग में दुखदाई नहीं चोरी करूं नहीं चोरी करूं आज से मैं तो नियम करूं ॥

॥ जुवे का ड्रामा ॥

भजन नं० १०

(ज्वारी) आओ खेलें जुआ आओ खेलें जुआ ।
पलमें फ़कीर अमीर हुआ ॥ टेक ॥
(विरोधी) मत खेलो जुआ मत खेलो जुआ ।
पल में अमीर फ़कीर हुआ ॥ टेक ॥

जुएबाज की सुनौं कहानी मन चित लाके भाई, द्रोपदी नारी

पांडव हारी शर्म ज़रा नहीं आई ॥ १ ॥

(जुवारी) जुवा खेला जो दुर्योधन ने जीती पांडव नार। एक घड़ी में बन गये यारो पर नारी भरतार ॥ २ ॥

[विरोधी] जुएबाज़ और चोर डाकू का कौन करे इतबार। जिधर जावे धक्के पावै मिलता नहीं उधार ॥ ३ ॥

[ज्वारी] जुएबाज़ और डकैतू कौन करै तकरार। जिधर जावै दौलत पावै मिलै एक के चार ॥ ४ ॥

[विरोधी] जुएबाज़ के पास जो होता इक दम देत लगा। बाल बच्चे चाहें भूखे मरजांय करै नहीं परवाह ॥ ५ ॥

[ज्वारी] जुएबाज़ के पास जो होता करता मौज बहार। ऐस उड़ावै घर में नारी मजें करे परवार ॥ ६ ॥

[विरोधी] अगर जो जावें हार जुए में फिर चोरी वो करते हर दम नानक राज द्वारे दण्ड भोगने पड़ते ॥ ७ ॥

[ज्वारी] वेशक जावें हार जुवे में फ़िकर नहीं कुछ करते अगले दिन जब ज़ीत के आवें मोटर गाड़ी चलते ॥ ८ ॥

[विरोधी] सब विषयों में विषय यह खोटा समझो मेरे भाई नर्क बीच लेजाने वाला सच्ची बात सुनाई ॥ ९ ॥

[ज्वारी] सुनी नसीहत तेरी भाई दिल में किया ख्याल इस पापी चंडाल जूवे ने कर दिना कंगाल ॥ १० ॥

(विरोधी) विद्यानन्द भव भव तिरना प्यारे सबसे नियम करावो एस. आर. कहे लानत भेजो खाक इसके सिर पावो ॥११॥

[ज्वारी] बड़ा जुवा जंजाल है भाइयो मत लो इस का नाम पैसे मारो फैंक जमीं से दूर से करो सलाम नहीं खेलें जुआ नहीं खेलें जुआ आज से हमने नेम लिया ॥

॥ सट्टे का ड्रामा ॥

(सट्टेबाज़) ज़रा सट्टा लगा ज़रा सट्टा लगा घर बैठे तू चैन उड़ा ॥

(मुखालिफ़) मत सट्टा लगा मत सट्टा लगा करदेगा तुझ को यह तबाह । सट्टेबाज़ कहूं कहानी सुनलो मेरे भाई । धन तो सारा दिया लुटा फिर होश ज़रा नहीं आई ॥

(सट्टेबाज़) सट्टे की कुछ कहूं हक़ीक़त सुन लो करके कान एक अंक जो निकले बस फिर होजावैं धन वान ॥

(मुखालिफ) एक अंक की आशा करते हो जाते कंगाल जगह जगह पर मारे फिरते बुरा होयें अहवाल ॥

(सट्टेबाज़) एक दाव जो आजावै बस फिर हो मौज बहार एक के बदले मिलैं कई सौ क्या अच्छा ब्योपार ॥

(मुखालिफ) सट्टेबाज़ कोई धनी न देखा सब देखे कंगाल बुरा शौक़ सट्टे का भाई कर देता पामाल ॥

(सट्टेबाज़) सट्टे में जो जीत कै आवै पावै ऐश आराम मजे करै परवार जो सारा क्या अच्छा ये काम ॥

(मुखालिफ) सट्टे के शौकीन जो भाई ढूंढ़े साधु फ़कीर । सौ सौ गाली सुन कर आवैं क्या उलटी तकदीर ॥

(सट्टेबाज़) साधू संत जो गाली देवैं तू क्या जाने यार सट्टेबाज़ ही अर्थ निकालें दिल में सोच विचार ॥

(मुखालिफ) सट्टे में कुछ नहीं भलाई हठ को छोड़ तू भाई सी. एच. लाल कहै तुमसे हो आखिर में दुखदाई ॥

(सट्टेबाज़) सुनी नसीहत तेरी भाई दिल में किया ख़याल

इस पापी चंडाल सट्टे ने करदीना कंगाल
नहीं सट्टा लगाऊं नहीं सट्टा लगाऊं
आज से लो मैं हलफ़ उठाऊं ॥

॥ वेश्या निषेध ड्रामा ॥

(रण्डी नचाने वाला) ज़रा रंडी नचा ज़रा रंडी नचा दौलत का दुनिया में यह है मज़ा ॥ टेक ॥

(मुख़ालिफ) मत रंडी नचा मत रंडी नचा नर्कों में देगी यह तुझको पहुंचा ॥ टेक ॥

फिज़ूल करो वरवाद रुपैया जरा तो सोचो भाई, देख देख संतान तुमहारी विगड़ जाय अन्याई ॥ १ ॥

(नचाने०) तालीम सीखने रंडी घर, औलाद हमारी जावे। सभी बात में ताक़ बने, फिर कहीं खना न पावे ॥

(मुख़ालिफ) रन्डी की खातिर जो देखे सो नारी ललचावें। मन में उन के उठे उमंगे, रंडी फ़ैशन बनावै ॥ ३ ॥

(नचाने०) समधी के दरवाजे सीठने रंडी आय सुनावै। दे जवाब समधन जब उसको बाग बाग हो जावै ॥ ४ ॥

(मुख़ालिफ) नाच देखने के शौकीनों जरा सुनो दे कान। रुपया तुमहारे से कुरवानी होवै बेपरमान ॥ ५ ॥

(नचाने०) हम रुपया रंडी को देते ना कुछ कहते भाई गान सुनै सो आनन्द पावे खूब शान्ती छाई ॥ ६ ॥

(मुख़ालिफ) रातों जगने से महफ़िल में होते हो बीमार बहुत जगह बुनियाद इसी पर चलत खून पैजार ॥ ७ ॥

(नचाने०) महफ़िलमें रंडीकी शोहरत सुन कर सब आजावैं

रौनक बड़े विवाह की भारी रुपया सभी चढ़ावैं ॥ ८ ॥

(मुखालिफ़) रंडी का सुन नाम सभासे धार्मिक जन उठ जावैं
नंगों के बैठे रहने से मजा नहीं कुछ आवै ॥ ९ ॥

(नचाने०) बिन इसके रौनक नहीं आवै सूनी लगे बरात
दिन तो जैसे तैसे बितावैं कटै न खाली रात ॥ १० ॥

(मुखालिफ़) धर्मोपदेशक बुलवा करके कीजे धर्म प्रचार।
रन्डी भड़वे तुमहें बनावें करदें ख़ाने ख्वार ॥ ११ ॥

(नचाने०) नित्य नहीं हम नाच करावें कभी कभी करवावें
नेग टेहले को साधैं हैं नहीं खना हम पावें ॥ १२ ॥

(मुखालिफ़) एक दफ़ै का लगाये चसका करदेता है ख्वार
धन दौलत सब खोकर प्यारे हो जायगा बेजार ॥ १३ ॥

(नचाने०) सुनी नसीहत तेरी भारी मन में हुवा विचार
रुपया तबाह होके क्या जाना होगा नर्क मझार ॥ १४ ॥
जरा सच्ची बता २

[मुखालिफ़] सत्य कहूं मैं नर्क पड़ोगे सुनलो रन्डी वालो
कहैं जवाहर जैनी तुम से क़सम धरम की खालो ॥ १५ ॥

[नचाने०] सुनकर शिक्षा तेरी भाई क़सम धरम की खाऊं
नाच देखने अरु करवाने का मैं हलफ़ उठाऊं ॥ १६ ॥

नहिं रन्डी नचाऊं नहिं रन्डी नचाऊं।
आज से जो मैं हलफ़ उठाऊं ॥

॥ भजन वेश्या निषेध ॥

रन्डी बाजी में गर्क जमाना हुवा।
बड़े अपनों को दाग लगाना हुवा ॥ टेक ॥

जिन के धन थे अपार फन्दे इसके पड़े यार ।
खोया जर माल सार, हुई इज्जत ख्वार ।
खाली दौलत का सारा खजाना हुवा । रन्डीवाजी में । १ ॥
एक पाई का यार, नहीं मिलता उधार ।
कहे आदम बदकार, मुंह में थूके संसार ।
फल वेश्या की प्रीति का पाना हुआ । रन्डीवाजी में० ॥ २ ॥
गरचे रन्डी के यार, गर्भ तेरा रह जाय ।
कन्या जन्मे जो आय जग से मैथुन कराय ॥
वेशुमार जमाई बनाना हुवा । रन्डी वाजी ॥ ३ ॥
यदि गर्मी होजाय, फिरो टहनी हिलाय ।
कहीं जावो चलाय, देख तुम को घिनाय ॥
कहें उठ जावो खूब, याराना हुवा । रन्डीवाजी० ॥ ४ ॥
जब लौं पैसा है पास रन्डी रहती है दास ।
नहीं पैसा रहा पास, देवे बाहर निकास ॥
घर से भूए निकल, क्या दीवाना हुवा । रन्डीवाजी० ॥ ५ ॥
जाओ फिर कर जो यार, मारे जूते हजार ।
दौड़ लावे पुकार, मुश्क बांधे सरकार ॥
पुलिस आगई इजहार लिखाना हुआ । रन्डीवाजी ॥ ६ ॥
फ़ौरन थाने में आन, किया तेरा चालान ।
हुक्म डिप्टी ने तान, दिया ऐसा लो जान ॥
छह की सजा दस जुरमाना हुवा । ७ ॥
कहता जैनी ललकार, कर इससे न प्यार ।
जावो नर्कों मंझार, नहीं हरगिज जिनहार ॥
प्रीति इससे न कर, क्यों दिवाना हुवा । रन्डीवाजी० ॥

॥ भजन वेश्या निषेध ॥

भजन नं० ११

वेशुवा बदकार की गलियों में जाना छोड़ दो
छोड़दे आंखे मिलाना दिल लगाना छोड़दे ॥ १ ॥
भोली भाली सूरतों को देख ललचाओ न दिल
सब को सब चित चोर चंचल मुंह लगाना छोड़दे ॥ २ ॥
तर्क कर इनकी मुरव्वत यह चलन अच्छा नहीं
इन के जाना छोड़दे घर पै बुलाना छोड़दे ॥ ३ ॥
ऐसे काफिर को कभी दिल में जगह दीजे नहीं
हों यह जिस महफ़िल में उस महफ़िल में जाना छोड़ दे ॥ ४ ॥
जिक्र तक करना नहीं अच्छा है इनका न्यायमत
है यही बहतर कि यह क़िस्सा फ़िसाना छोड़दे ॥ ५ ॥

॥ भजन वेश्या निषेध ॥

भजन नं० १२

मत वेश्या से प्रीति लगाओजी ॥ टेक ॥
लाखो हजारों घर गारत हुए हैं नालिश करादी
कुरकी फलादी नीलामों की होय मनादी । हा । मत० ॥ १ ॥
लाखों हजारों प्राणी भूखे मरे हैं धन को खोकर निर्धन हो कर
फिरें भटकते हैं दर २ । हा । मत० ॥ २ ॥
लाखों करोड़ों की जानें गई हैं वीरज खो कर निर्बल हो कर
हो बीमार मरें सड़ सड़ कर । हा । मत० ॥ ३ ॥
हजारों गरमी से सड़ रहे हैं नीम की टहनी पड़ेगी लेनी

होय मुसीबत भारी सहनी । हा । मत० ॥ ४ ॥

लाखों प्रमेह रोग भुगत रहे हैं, तेल खटाई मिर्च मिठाई
खावैं तो कमबखती आई । हा । मत० ॥ ५ ॥

होवें जो रंडी के पुत्री तुमहारे, करनी कमाई दुनिया से
भाई गिनो तो कितने भये जमाई । हा । मत० ॥ ६ ॥

कहता जैनी अब कुछ चेतो, माल बचाओ इज्जत कमाओ
भूल कभी वेश्या के न जाओ । हा । मत० ॥ ७ ॥

गजल नं० १३

हया और शर्म तज रंडी सरे महफ़िल नचाई है
न समझी इसमें कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है ॥ १ ॥

निगाहे बद से देखें बाप बेटा और भाई सब
कहो यह मा हुई भावी बहू अथवा लुगाई है ॥ २ ॥

दिखा कर नाच औरपया नजर उन से दिला करके
अरे अन्याइयां बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है ॥ ३ ॥

लखें कोठे झरोखों से तुमहारे घर की सब नारी
असर क्या नेक उन के दिल पै पैदा होता भाई है ॥ ४ ॥

येह खातिर देख उसकी सबके दिल में आग लगती है
हैं आपस में ये कहतीं वाह क्या उमदा कमाई है ॥ ५ ॥

कभी बिछुवे न नथ बाली हमें स्वामी ने बनवाई
मगर इस बेवफ़ा औरत को दी सारी कमाई है ॥ ६ ॥

हुई खातिर कभी ऐसी न जैसी इसकी होती है
बनी बेगम पड़ी दिन रात तोड़े चारपाई है ॥ ७ ॥

॥ भजन कन्या विक्री ॥

भजन नं० १४

वह पुरुष महा चंडाल है जो कन्या वेच कर खावै
महा दुष्ट पापी वह जन है जो कन्या पर लेता धन है
दया धर्म का वह दुशमन है लोभी कुटिल कुचाल है
जो कुल को दाग लगावे ॥ १ ॥
लालच से धन के अन्याई लड़की के लिये वने कसाई
बूढे खूसठ से उसे व्याही जिस का चरा मुंह गाल है
और हिला चला नहीं जावे ॥ जो ॥ ॥ २ ॥
रूप वती अति सुंदर वाला वर है महा वदमूरत काला
जल्द चिता में जाने वाला तन की लटक रही खाल है
नित थर २ मूढ़ हिलावै । जो ॥ ३ ॥
नहीं जानै वेचारी अवला बूढ़ा पति लगै या वावा
ना उस से घूंघट ना परदा खवर न क्या सुसराल है,
जो इस का घर कहलावै ॥ जो० ॥ ४ ॥
कुछ दिन में बूढ़ा मर जावै कन्या को कर रांड विठावै
सारी उम्र वह दुःख उठावै सहती विपत कमाल है
विरह अग्नि जिगर जलावै ॥ ५ ॥
मोही मात पिता अरु भाई चाचा ताऊ ब्राह्मण नाई
जो कन्या पर करते कमाई पुख्ता मेरा ख्याल है
हर एक नर्क में जावै ॥ जो० ॥ ६ ॥
सालिग ऐसे मात पिता को जो वेचै अपनी दुहिता को
नजर हिकारत से नित देखो कहते सव चंडाल है
देखे से पाप लगजावै है ॥ ७ ॥

भजन नं० १५

हुये कैसे मां बाप पुत्री बेचकर खावें
भेड़ और बकरी की नाई बेचें हैं उन्हें अन्याई
नक़द लेलें चुपचाप ॥ पुत्री० ॥ १ ॥
कोई तीन हजार लगावे कोई बदले ब्याह करावे
हाय कैसा है पाप ॥ पुत्री० ॥ २ ॥
बच्ची बूढ़ों से ब्याहैं उन्हें करना विधवा चाहैं
करैं नहीं पश्चाताप ॥ पुत्री ॥ ३ ॥
अय सुता बेचने वालो अब ज़ुल्म से हाथ उठालो
शर्म से लो मुंह ढांप ॥ पुत्री० ॥ ४ ॥
मेहनत से टका कमाओ मत पुत्री बेच कर खाओ
बनो नहीं पापी आप ॥ पुत्री० ॥ ५ ॥
कहे सालिग राम पुकारी तुम मानो बात हमारी
जो हो सच्चे मा बाप ॥ पुत्री० ॥ ६ ॥

भजन न० १६

मांस बेच बेटी का पापी करैं सुता नीलाम ॥ टेक ॥
बकरे भेड़ दुम्बों की नाई कन्या बेचें हैं अन्याई
करते मोल शर्म ना आई तजदी दया तमाम । मांस० ॥ १ ॥
कोई एक हजार लगावै कोई दोय तीन फरमावैं
बूढा मांगो सो दे जावै हो मोल बीच हंगाम । मांस० ।.२ ॥
घना रुपैया जोय लगावै उसको ही कन्या छुट जावै
फेरों पर नगदी गिनवावैं मानै नहीं गुलाम ॥ मांस० ॥ ३ ॥
पुत्री का जिन खोटा चीन्हा लेकर रुपया रंडापा दीना

लानत है उस नर का जीना जैनी कहै सत्य कलाम मांस० ॥ ४ ॥

॥ भजन वृद्ध विवाह निषेध ॥

भजन नं० १७

बुढ़ापे की अवस्था में जो व्याह अपना कराते हैं
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फंसाते हैं ॥ १ ॥
नहीं मालूम इन बूढ़े बुजुर्गों को यह क्या सूझी
कि जो मरते समय अपना अनोखा व्याह कराते हैं ॥ २ ॥
कपें तन और हिले गर्दन नहीं है दांत तक मुंह में
मगर देखो तो बूढ़े जी फबन कैसी दिखाते हैं ॥ ३ ॥
जड़ें सूर्मा मलें उबटन कटा कर मूंछ अरु डाढ़ी
बरस पंद्रह या सोलह का यह अपने को बनाते हैं ॥ ४ ॥
नहीं आती शरम उनको ज़रा नौशा कहाने में
नजानें कौनसी उम्मीद पर कंगना बंधाते हैं ॥ ५ ॥
बहत्तर साल के हैं खुद बदौलत दश की है कन्या
नहीं बूढ़े मियां इस जोड़ पर दिल में लजाते हैं ॥ ६ ॥
महीने दो महीने बाद ही यह पीर ना बालिग
हमेशा के लिये मरघट में जा डेरा जमाते हैं ॥ ७ ॥
मजे से आप तो जाकर चिता में लेट जाते हैं
मगर ताजिंदगी कन्या बिचारी को रुलाते हैं ॥ ८ ॥

भजन नं० १८

बूढ़े बाबा करैं विवाह मौत के मुंह में जानेवाले
थर २ कांपे है ये हाल सारी लटक रही है खाल
दोनों सूख गये हैं गाल पोपले हलुवा खाने वाले ॥ १ ॥

मुड़कर हो गई कमर कमान मुंडवा मूछ बने हैं ज्वान
बांधा मौर बैठकर बान बन गये नौशे कहाने वाले ॥ २ ॥
अंजन आंखों लोना सार डाला गल फूलन का हार
सिर पर पगड़ी गित्ते दार सजगये हंसी कराने वाले ॥ ३ ॥
देखे जीने से लाचार नारी तब करती व्यभिचार
बढ़ते पाप हैं बेशुमार नहीं दिल में शरमाने वाले ॥ ४ ॥
कितनी रोवें ज़ार बेज़ार कितनी विषखाती हैं नार
सुन २ बेटी के आचार रोवें छुप २ धन खाने वाले ॥ ५ ॥
बढ़गई विधवों की तादाद सुनता कोई नहीं फ़र्याद
पाठक होवें वे बर्बाद धनी जो व्याह रचाने वाले ॥ ६ ॥

॥ बुड्ढे के विवाह का ड्रामा ॥

भजन नं० १६

छोटी सी छोकरी को व्याहे लिये जाय ॥ शेम शेम ॥ टेक ॥
गोदी खिलायगा । बेटी बनायगा । नन्ही सी बाला को व्याह लिये जाय ॥ छोटी० ॥ शेम शेम ॥ १ ॥

हिये का फूटा दांतों का टूटा बोखे से मुंह का यह व्याह लिये जाय ॥ छोटी० ॥ २ ॥

दाढ़ी मुंडाई मूछें कटाई चहरे पै उबटन मलाय लिये जाय ॥ छोटी० ॥ ३ ॥

सिर को रंगाया सुरमा जमाया मुख पे तो पऊडर लगाइ लिये जाय ॥ छोटी० ॥ ४ ॥

गरदन है हिलती आंखें हैं मिलती हाथों में कंगन बंधाइ लिये जाय ॥ छोटी० ॥ ५ ॥

मिस्सी लगाई महंदी रचाई सिरपै तो सेहरा बंधाइ लिये

जाय ॥ छोटी ॥ ६ ॥

पोती सी दुलहन वावा सा दुलहा रोती २ छोकरी उड़ाइ लिये जाय ॥ छोटी० ॥ ७ ॥

ग्यारह की वन्नी अस्सी का वन्ना रुपयों की थैली झुकाइ लिये जाय ॥ छोटी० ॥ ८ ॥

देखो यह बूढ़ा बुद्धि का कूड़ा करने को विधवा यह व्याह लिये जाय ॥ छोटी ॥ ९ ॥

गजल नं० २०

मानो मानों यह शिक्षा हमारी रे ॥ टेक ॥

कन्या पै जुल्म करते हैं तुम को दया नहीं बूढ़ों के साथ व्याहते हो तुम को हया नहीं धन के लोभी हैं बाप महतारी रे ॥ मानो० ॥ १ ॥

रंडी का नाच बंद करना देखो दिखावो व्यभिचार का है भूलना बच्चों को सिखावो आखिर विगड़े संतान तुमहारी रे ॥ मानो० ॥ २ ॥

फ़िजूल खर्ची बंदकर कीजै सभा जारी कुरीति सारी मेटकर वनिये धरम धारी, करो भारत धरम उजयारी रे ॥ मानो० ॥ ३

जैनी करे नसीहत मिथ्यात छोड़िये जो पड़गया है जाल उसे शीघ्र तोड़िये वरना नरकों की होवै तैयारी रे ॥ मानो० ॥४

॥ कन्या की पुकार ॥

भजन न० २१

माता पिता ने हमको दुलहन बना के मारा
बुड्ढे के साथ शादी करके जुलम गुजारा

सिरपर सफैदी छाई ऐंजा बिगड़ गये
सब ये हाल देख कर भी हम को कुए में डाला ॥ १ ॥
हा शर्म की वजह से मैं न जुबां से बोली
जिस की वजह से मुझ पर भोंका गया कटारा ॥ २ ॥
सब ख्वाहिसें जवानी मन में रही हमारे हम होगई जवां
जब बालम सुरग पधारा ॥ ३ ॥
सीने में आग मेरे आतिश फिशा उठी हैं मैं किस के आगे रोऊं
जो दुख सुनै हमारा ॥ ४ ॥
अहले बिरादरी भी शामिल थी दावतों में
जिसकी वजह से हम पर खंजर चला दुधारा ॥ ५ ॥
जरके गुलाम बनकर मादर पिदर ने बेचा
हज्जूम कौम का भी खाने को आ पधारा ॥ ६ ॥
छोड़े बिरादरी कुल इन पापियों का खाना
बेचे सुता जो अपनी उससे करो किनारा ॥ ७ ॥
होवे सुधार फ़ौरन यह अर्ज है दुलहन की
मानो क़सम तुमहैं है जैनी कहै पुकारा ॥ ८ ॥

॥ भजन बाल विवाह ॥

भजन नं० २२

बच्चेपन में करें विवाह बाप मां खुशी मनानेवाले
क्या है किसका यह सामान, जिस को खबर नहीं उस आन
बालक नन्हा है नादान ब्याहें जिसे गोद उठाने वाले ॥ १ ॥
होवे बड़ी बहू धन भाग लल्ला गलियों गावै राग
रोटी मांगै सवेरे जाग पपैया पी पी बजाने वाले ॥ २ ॥
कितने भेट शीतला माय कितने डूबें नदियों जाय

रोवें सिर धुन धुन पछिताय कुटुंब लाड लडाने वाले ॥ ३ ॥
जो कोई बचकर हुवा जवान उन से निर्बल हो संतान
जल्दी होजाय चिंतावान वैद्य घर स्याने बुलाने वाले ॥ ४ ॥
घर में बढ़ जावै तकरार चूल्हे हों फिर दो के चार
सोचै पांव कुल्हाड़ी मार कुवा के बीच डुबाने वाले ॥ ५ ॥
पाठक होजाओ हुशियार जल्दी करलो देश सुधार
देखो उठकर नैन उघार विदेशी हंसने हंसाने वाले ॥ ६ ॥

॥ हिन्दी भाषा की प्रशन्सा ॥

भजन नं० २३

सकल भाषाओं में रे उत्तम देवनागरी भाषा । टेक ॥
देव नागरी है वो भाषा जो लिखो सो पढ़लो
और किसी में सिफत नहीं है चाहे परिक्षा करलो ॥ १ ॥
अक्षर केवल चार नागरी शब्द बना हरिद्वार
सात हरफ उर्दू के मिलकर बनना हरी दिवार ॥ २ ॥
एच. ए. आर. डी. डबल्यू . ए. आर [HARDWAR] अंग्रेजी में यार
इतनी दूर में लिक्खा जावै फिर भी हरीडुआर ॥ ३ ॥
किसी ने उर्दू में खत लिखकर मंगवाये थे आलू
पढ़ने वाले ने क्या भेजा इक पिंजरे में उल्लू ॥ ४ ॥
शुड [SHOULD] में ऐल लिखा जाता है पढ़ने में नहीं आवै
कौन खता के बगैर मतलब विरथा पकड़ा जावै ॥ ५ ॥
सुंदर नाम नागरी लिखो मियचर मोती दत्त
अंग्रेजी में लिक्खा जावै डीयर मोटी डट्ट ॥ ६ ॥
इंगलिस के इस्पैलिंग देखकर क्यों ना हांसी आवै
बी यू टी तौ बट किंतु पी यू टी पुट हो जावै ॥ ७ ॥

मुद्दत से यह संस्कृत भाषा मुरदा हुई थी सारी
पुनः जीवित कर गये इसको अकलंक देव निसारी ॥ ८ ॥

॥ फरियाद गऊ की ॥

भजन नं० २४

बदले में दूध घी के भूसा खिलाने वाले। इक बात मेरी सुन जा ओ बेच जाने वाले ॥ टेक ॥

बूढ़ी हुई जो माता किसने निकाला घर से। कहती हूं क्या सुना भी ओ छोड़ जाने वाले ॥ १ ॥

गर दूध कम दिया है तब तो हिसाब यह है। खाई खुराक थोड़ी, दिल में लजाने वाले ॥ २ ॥

सुनती हूं कौम तेरी, रक्षक रही हमेशा। बेकस की बेबसों की, ओह भूल जाने वाले ॥ ३ ॥

सतयुग का वह जमाना क्योंकर भुलाऊं दिलसे। आते हैं याद मुझको, मेरे बचाने वाले ॥ ४ ॥

सन्तान जिन की तुम हो पैरो बनों उन्हीं के। कुछ लाज रख बड़ों की, ऊंचे घराने वाले ॥ ५ ॥

डी. सी. सुनेंगे क्योंकर, फरयाद वह गऊ की, जो ऐश में हैं बाबू मनको लगाने वाले ॥ ६ ॥

भजन नं० २५

कलियुग में मेरा कोई मददगार नहीं है।
कुछ इस में खता मेरी तो सरकार नहीं है ॥ टेक ॥
बेदरदी से ज़ालिम ने मुझे खूब सताया।

तक़दीर का लिखा था ये अख्त्यार नहीं है ॥ १ ॥
है सख्त ताज्जुब किरही जुल्म ही सहती। पर दूध पिलाने से तो इन्कार नहीं है ॥ २ ॥ अय्याम जवानी में पिया दूध तो तुमने । बुढो का मगर रखना सजावार नहीं है ॥ ३ ॥ फिर देखिये क्या हाल है बाजार में मेरा। ज़ालिम के सिवा कोई खरीदार नहीं है ॥ ४ ॥ दुखयारी को ऐ हिन्दू मुसलमान बचालो। धर्म का बाज़ार है बाज़ार नहीं है ॥ ५ ॥

भजन नं० २६

गौ हिंसा के कारण हम ने एक यही बस पाया है, चमड़े का खर्च लोगों ने कुछ दिन से बहुत बढ़ाया है ॥ टेक ॥
हाय हाय चांदी सोने को लोग छोड़ते जाते हैं॥ इन के एवज़ में अब चमड़ा काम में लाते हैं, वो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वर्ण की यूं मर्याद मिटाते हैं, कितनों के एड़ी से चोटी तक हम चमड़ा ही पाते हैं, धर्म कर्म सब नष्ट हुआ चमड़े ने चरण जमाया है, गौ हिंसा० ॥ १ ॥ फ़ैल्ट कैप में चमड़े की कत्तर इसलिये लगवाते हैं कपड़ा क़ागज़ तो शीघ्र गले यह तो मजबूती चाहते हैं। पतलून में गैलिस चमड़े की कंधे पर जिसे लटकाते हैं, पेटी पतलून में चमड़े की बढ़िया फ़ैंसी मंगवाते हैं। पैरों का फुलबूट चाम का डासन से मंगवाया है, गौ हिंसा० ॥ २ ॥ चमड़े की जब चैन घड़ी में लगती मन को प्यारी है, चाम का बटुआ पड़ा जेब में जिस से इज्जत दारी है, चमड़े की कलाई वाच बांध कर मन में मगन नर नारी है, हो मनी बेग भी चमड़े का चमड़ेकी गैटिस न्यारी है, बिस्तरा बंध भी चमड़े का यह भी फ़ैशन में आया है, गौ हिंसा० ॥ ३ ॥ घोड़े की जीन भी चमड़े की साई दे देकर सिलवाई। चांदी सोने से बढ़ कर अब इज्जत चमड़े ने पाई।

रामचन्द्र कहे एक कसर अब तो है थोड़ी सी भाई, हो चमड़े के पतलून कोट और लिहाफ़ बिछौना रजाई, हाय ऋषी संतान ने कैसा ज्ञान के धोका खाया है, गौ हिंसा० ॥ ४ ॥

भजन नं० २७

जुल्म कर करके जलीलों को जलाते न चलो, छुरी गर्दनपै गरीबों के चलाते न चलो। नहीं रहने का हमेशा है यह हुस्ने दरिया, बदी की बाढ़ से बहुतों को बहाते न चलो ॥ १ ॥

दौर दौरा सदा रहता न किसी का साहब। सितम शमशेर से आलम को सताते न चलो। अक्ल से काम लो खलकत है खुदा की इस में। होके बेदर्द दिल दीनों को दुखाते न चलो ॥ २ ॥

चन्दरोज़ा है इस दुनिया में जिंदगी जिस पर, निशां नेकी का जमाने से मिटाने न चलो, खुदा का खौफ़ करो कुछ भी तो दिलमें यारो, रश्क से खाक में बन्दों को मिलाने न चलो ॥ ३ ॥

अता मालिक ने किया आप को हुस्नो दौलत, गजब की चाल से गर्द को हिलाने न चलो। वक्त बलदेव अब जाता है कमालो नेकी, ख्वाहिशे नफसमें जिंदगी को गंवाते न चलो ॥ ४

भजन नं० २८

कमर बांधो यह भारत जगाने को ॥ टेक ॥ अविद्या से हुआ देश यह गारत, कालिज खोलो अविद्या हटाने को ॥ १ ॥
मूरख फिरते हैं भाई करोड़ों, करो साधन उन्हीके पढ़ाने को ॥ २ ॥
तालीम बिकने से देश डूबा फ्री शीक्षा दो विद्या सिखानेको ॥ ३ ॥

इतिहास भूले हैं हम सब पहला पेपर काढ़ो त्रिकुटी के सुभाने को ॥ ४ ॥ शास्त्र गल के चूर्ण हुये हैं, पोथी छापो धरम के चलाने को ॥ ५ ॥ होते हैं भाई मुसलमां ईसाई, करो शास्त्रार्थ धर्म बढ़ाने को ॥ ६ ॥ स्वदेशी वस्तु वरतो वरताओ, भूंखे भाइयों के प्राण बचाने को ॥ ७ ॥ कुरीति फैली है देश भर में करो कोशिश उसी को मिटाने को ॥ ८ ॥ फ़जूल खर्ची कर के भाई फिरें मिट्टीमें देश मिलाने को ॥ ९ ॥ गौरवका धुंवा अपना उड़ाकर चले सिगरिट का धुंवा उड़ाने को ॥ १० ॥ विपयी होगई सन्तति घनेरी नाम बूढ़ों बड़ों का डुवाने को ॥ ११ ॥ धर्म में खर्चें कौड़ी न पाई रंडी भडुवे लगे हैं नचानेको ॥ १२ ॥ वीरता बाकी है गर हे सपूतो काम कीजो कुछ जाती उठाने को ॥ १३ ॥ कहता जैनी मत लोग हंसावो, काम करके दिखादो जमाने को ॥ १४ ॥

भजन नं० २९

जुल्म करना छोड़दो साहिब खुदा के वास्ते । जुल्म अच्छा है नहीं करना किसी के वास्ते ॥ टेक ॥ रहम कर जीवोंपे बस मत जुल्म पर बांधे कमर । क्यों सताता है किसी को चन्द दिन के वास्ते ॥ १ ॥ सच कहो खुद गर्ज और जालिम है तू याके नहीं । बेजुवां को मारता अपने मजे के वास्ते ॥ २ ॥ काट गल औरों का मांगे खैर अपनी जानकी । सोच कहां होगा भला तेरा खुदा के वास्ते ॥ ३ ॥ भेट कुर्वानी वलीयज्ञ से खुदा मिलता नहीं । बलके दोजख़ है खुला इन जालिमों के वास्ते ॥ ४ ॥ पोप मुल्लां की न सुन दिलमें जरा इन्साफ कर । है कहीं अच्छा जुल्म करना किसी के वास्ते ॥ ५ ॥ कर भला होगा भला कलजुग नहीं करजुग है यह । न्यायमत कहता है यह तेरे भले के वास्ते ॥ ६ ॥